अयोध्या कांड की कथा-वस्तु

डॉ गणेश शंकर पांडे
सहायक अध्यापक
हिंदी विभाग
दुर्गा कॉलेज रायपुर

1. प्रस्तावना

रामचरितमानस का दूसरा कांड अयोध्या कांड है।
इसमें कुल 7,600 पंक्तियाँ और लगभग 1200 दोहे-चौपाइयाँ हैं।
इस कांड में मुख्यतः राम के वनवास, दशरथ की मृत्यु, और राम-सीता-लक्ष्मण के अयोध्या से प्रस्थान की कथा आती है।

2. कथा-वस्तु

(a) राम के राज्याभिषेक की तैयारी

दशरथ जी श्रीराम का राज्याभिषेक करना चाहते हैं।
अयोध्या नगरी में हर्ष और उल्लास का वातावरण है।

(b) कैकेयी का कोप और वरदान

मंथरा की प्रेरणा से कैकेयी क्रोधित हो जाती है।
वह दशरथ से दो वरदान मांगती है –

1. भरत को राज्याभिषेक मिले।

2. राम को चौदह वर्ष का वनवास मिले।

(c) राम का वनवास स्वीकार करना

दशरथ अत्यंत दुखी होते हैं, किंतु राम पिता के वचन की मर्यादा के लिए वनवास स्वीकार कर लेते हैं।
सीता और लक्ष्मण भी राम के साथ वन जाने का निश्चय करते हैं।

(d) अयोध्या का शोक

राम, सीता और लक्ष्मण के वन जाने से अयोध्या नगरी शोकाकुल हो जाती है।
नगरवासी व्याकुल होकर उनके साथ चलने का प्रयास करते हैं।

(e) गंगा तट पर प्रस्थान

त्रयोदशी तिथि को राम-सीता-लक्ष्मण वन की ओर निकल पड़ते हैं।
वे गंगा तट पर पहुँचते हैं और निषादराज गुह उनसे मिलते हैं।

(f) दशरथ की मृत्यु

राम-वियोग में शोक से व्याकुल दशरथ की मृत्यु हो जाती है।
अयोध्या में शोक छा जाता है।

3. विशेषताएँ

आदर्श पुत्र के रूप में राम का चित्रण।
वचनपालन और धर्मपालन की अद्‌वितीय भावना।
त्याग, करुणा और मर्यादा की उच्च अभिव्यक्ति।

अयोध्या कांड में राम की जीवन यात्रा का सबसे करुण और मार्मिक प्रसंग मिलता है।

4. निष्कर्ष

अयोध्या कांड रामचरितमानस का अत्यंत मार्मिक और हृदयस्पर्शी भाग है।
इसमें राम के आदर्श, सीता-लक्ष्मण की त्याग भावना, और अयोध्या की जनता का राम के प्रति प्रेम प्रकट होता है।
यह कांड त्याग, मर्यादा और धर्मपालन की शिक्षा प्रदान करता है।